संस्थापित १८६७ ई०

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

वर्ष : १२३ ● अंक - ४६ ● ०४ दिसम्बर २०१८ मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष द्वादशी संवत् २०७५ ● दयानन्दाब्द १९४ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १९६०८५३११९

परोपकारिणी सभा के प्रधान बनने पर– आर्य जगत् की ओर से वैदिक विद्वान श्री डॉ० वेदपाल जी आचार्य (मेरठ) उ०प्र० का हार्दिक अभिनन्दन

–स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती

अतीव प्रसन्नता का विषय है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की उत्तराधिकारिणी सभा जो सार्वदेशिक सभा के स्तर की सभा है पूरे दूश के चुने हुए आर्य विद्वान अधिकारी–कार्यकर्त्ता एवं समाजसेवी महानुभावों का ट्रस्ट है इसके माध्यम से अजमेर में महर्षि जी का सम्पूर्ण साहित्य प्रकाशित होता है तथा उनकी समस्त सम्पत्ति की सुरक्षा का भी दायित्व है ऋषि मेला दीपावली के शुभ अवसर पर प्रतिवर्ष लगता है इस वर्ष १६, १७ एवं १८ नवमब्र २०१८ को सभा का निर्वाचन सम्पन्न हुआ जिसमें सर्वसम्मति से श्री डा० वेदपाल जी आचार्य मेरठ को प्रधान मनोनीत किया गया। इससे पूरे आर्य जगत में उत्साह और प्रसन्नता का वातावरण है विशेष रूप से मेरठ, गाजियाबाद, हापुड़ जिला आर्य प्रतिनिधि सभाओं के आर्य शुभकामनायें प्रदान करते हैं। आपका जन्म तत्कालीन मेरठ तथा वर्तमान हापुड़ जिले में हुआ है हापुड़ नगर के निकट ग्राम ततारपुर में समाजसेवी प्रधान म० रघुवीर सिंह आर्य के घर को शोभायमान किया उपदेशक विद्यालय भटिण्डा पंजाब, गुरूकुल ततारपुर एवं गुरूकुल म.वि. ज्वालापुर से विद्याभास्कर की उपाधि से स्नातक होकर मेरठ वि.वि. मेरठ से एम.ए. एव पी.एच.डी. करने के पश्चात् दीर्घकाल तक जनता वैदिक कालेज बड़ौत में संस्कृत विभागाध्यक्ष रहे अब गुरूकुल ततारपुर एवं परोकारिणी सभा में अध्यक्ष पद पर शोभायमान हैं। आर्य प्रतिनिधिसभा उ०प्र० लखनऊ के सभा कार्यालय में अध्यक्ष पद पर शोभायमान है।

आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० लखनऊ के सभा कार्यालय में इस शुभ समाचार से हर्ष की लहर दौड़ गई है सभा के प्रधान डा० धीरज सिंह जी एवं सभी अधिकारी तथा कर्मचारी आपके इस सम्मान एवं गौरव से आपका हार्दिक अभिनन्द करते हैं तथा आशा करते हैं कि आपकी योग्यता–विद्वता एवं अनुभव से सभा दिनों दिन प्रगति करेगी। उत्तर प्रदेश के लिए भी यह गौरव की बात है प्रदेश की ओर से आपको हार्दिक शत्–शत् वन्दन अभिनन्दन बधाई स्वीकार करें।

–आपका अनुज

धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, मन्त्री– आर्यप्रतिनिधि सभा, उ०प्र०

वार्षिक बृहदाधिवेशन की सूचना

सभी पदाधिकारियों, प्रतिष्ठित, सहयुक्त, अन्तरंग सदस्यों, सभी आर्य समाजों के पदाधिकारियों/प्रतिनिधियों एवं जिला आर्य उप प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधियों/ पदाधिकारियों को सूचित किया जाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० की वार्षिक साधारण सभा का अधिवेशन दिनांक–१९ एवं २० जनवरी, २०१९ शनिवार एवं रविवार (पौष शुक्ल पक्ष त्रयोदशी एवं चर्तुदशी) को यज्ञोपरान्त समारोहपूर्वक प्रातः ११ बजे से आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, लखनऊ के प्रधान डॉ० धीरज सिंह जी का अध्यक्षता में आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०, (नारायण स्वामी भवन), ५–मीराबाई मार्ग, लखनऊ में होना सुनिश्चित हुआ है। **–स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती,** सभा मंत्री

अथर्ववेद पारायण सम्पन्न हुआ

–डॉ० धीरज सिंह, सभा प्रधान

बुढ़ाना मुजफ्फर नगर दिनांक १२ नवम्बर से लेकर १४ नवम्बर तक आर्य समाज बुढ़ाना मुजफ्फर नगर में अथर्ववेद पारायण एवं वेद प्रचार हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ यज्ञ के ब्रह्म आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक ने यज्ञ की महिमा पर प्रकाश डाला एवं भजनोपदेशक कुलदीप जी आर्य के भजनों के माध्यम से सभी आर्यजनों को वैदिक धर्म की प्रेरणा मिली कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रहे आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के प्रधान डॉ० धीरज सिंह आर्य जी ने अपने उद्‌बोधन में सभी आर्यजनों से यज्ञ की परम्परा को जन–जन तक पहुंचाना है और प्रत्येक व्यक्ति को यज्ञ की महत्ता को बताना होगा। यह तभी सम्भव हो सकता है जब हमारे विद्वान और प्रचारक नगर–नगर, गाँव–गाँव जाकर प्रचार करें आज यज्ञ का स्वरूप बिगड़ चुका है लोग यज्ञ तो करते है पर वेद के मन्त्रों से नहीं अपितु श्लोकों से आज आर्य समाज को पुनः प्रचार क्षेत्र में उतरना होगा तभी संभव है। इस अवसर पर आर्य समाज बुढ़ाना के मंत्री श्री अरविन्द कुमार जी ने सभी विद्वानों का आभार व्यक्त किया कार्यक्रम में डॉ० अरूणा त्यागी, प्रधानाचार्य, आ.का. इ. का. बुढ़ाना, डा० प्रदीप कुमार प्राचार्य डी.ए.वी. का. बुढ़ाना, श्रीमती रेखा त्यागी प्रधानाचार्य डी.ए.वी. स्कूल बुढ़ाना, राजीव कुमार मंत्री अरूण कुमार कोषाध्यक्ष, आदि महानुभाव उपस्थित रहे।

डॉ. धीरज सिंह
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

सम्पादकीय.....

समाज को एक परिवार के रूप में देखना चाहते थे महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्व को एक परिवार के रूप में देखना चाहते हैं। सभी का कल्याण एवं सभी का उत्थान करना चाहते हैं। प्रत्येक आबाल वृद्ध उनके विचारों को स्वीकार कर लेवे तो पूरी दुनियां में सुख–शान्ति की स्थापना निश्चित हो सकती है। गत शताब्दी में समाज का परिवर्तन हुआ। शिक्षा, संस्कार संसकृति, सभ्यता, विज्ञान के युग में भयंकर परिवर्तन हुआ है लेकिन स्वामी जी द्वारा स्थापित मानवीय मूल्यों में सिद्धान्तों एवं नियमों में काई वैज्ञानिक विद्वान, पन्थ मजहब, सम्प्रदाय वादी महन्त अथवा कोई पादरी धार्मिक नेता किसी शब्द को स्वयं तो स्वीकार कर लिया होगा लेकिन कोई उसे पृथक् नहीं कर सका यह उनकी सांस्कृतिक दिग्विजय हैं। आर्य समाज की जिम्मेदारी इस रूप में भी देखी जा सकती है जिसमें पूरे संसार के उपकार करने की भावना प्रदान की गई है आर्य के १० नियम बनाकर अपना उद्देश्य संकल्प के रूप में प्रतिष्ठित किया है उसके छठे नियम में स्वामी जी लिखते हैं कि –''संस्कार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक आऔर सामाजिक उन्नति करना''।

यह अकेला नियम ही पर्याप्त है। जो महर्षि के उदार हृदय का परिचायक है। इसमें ''वसुधैव कुटुम्बकमं की भावना निहित है। वेद के आदेशानुसार एक सन्देश प्रसारित करते हैं कि ''कृण्वन्तोविश्वमार्यम्'' पूरे संसार को श्रेष्ठ समाज बनाओ उनका कोई व्यक्तिगत चिन्तन नहीं था वैश्विक विचारधारा से विश्व के सभी आबाल वृद्ध को परिचित कराना चाहते हैं उनका जीवन इसी परम्परा के प्रचार–प्रसार में संलग्न रहा वे बड़े स्पष्ट शब्दों में उद्घोषणा करते हैं कि '' मेरा कोई मतमतान्तर चालने का उद्देश्य नहीं है मैं तो सृष्टि के प्रारम्भ में ब्रह्मा से लेकर जैमिनी ऋषि पर्यन्त ऋषि जो मानते आये हैं, मैं उसे यथावत् मानता और मनवाना अभीष्ट समझता हूँ, अपनी ओर से कोई नया सम्प्रदाय बनाना नहीं चाहते और जो बातें वेदों की शिक्षा से संसार में स्थापित करना चाहते थे वे सत्यार्थ प्रकाश तथा संस्कार विधि में स्पष्ट करके व्यक्तिगत जीवन निर्माण की परिकल्पना करके भारत के सुयोग्ज स्नातक वेदों का विद्वान् होकर ब्रह्मचर्य से तेजस्वी बनाकर सार्वभौम चक्रवर्ती सम्राट के पद पर अभिसिक्त हो ऐसा स्वप्न महर्षि जी ने देखा था आज हम उसे समझ ही नहीं पाये हमारे नेता उधर क्रियान्वित करने की दिशा में सोच नहीं बना पाये और राजनीति से प्रभावित होकर स्वयं एकांगी बन गए। उसमें उदारता– विशालता का अभाव रहा अन्यथा इतने समय में यदि हमारा आलस्य हमें उदासीन न करता तो आज पूरे विश्व में वैदिक सन्देश से प्रभावित जनमानस होता। वर्षा ऋतु की तरह जो अनावश्यक पौधे अंकुरित होकर असली फसल पर अपने प्रभाव से उसे कमजोर करके स्वयं प्रभावी हो जाते हैं वहीं स्थिति आज आर्य समाज एवं अन्य सम्प्रदायों की है। राम रहीम, सन्तरामपाल दास अथवा आशाराम जो एक प्रतीक बने हैं ऐसे तो पता नहीं हजारों हजारों प्रकार के पौधे समाज में सम्प्रति प्रभुसत्ता की जगह अपनी स्वतन्त्र सत्ता जमाये बैठे हैं। जब उन्हें लगता है कि कहीं हमारा भी क्रम इधर न आ जाये सरकार कही हमारी जाँच न कर बैठे तब उन्हें महर्षि दयानन्द जी याद आने लगते हैं। क्योंकि वही ऐसी ढाल है जो विश्व में हमें सुरक्षित रख सकती है। अभी श्री श्री रविशंकर जी महाराज का भाषण मैं टी.वी. का जादू सबके सिर पर चढ़ेगा सबके अन्तःकरण को यदि पवित्रता होगी तो वह महर्षि दयानन्द जी ही कर सकते हैं।

उन्होंने बताया कि यदि समाज को बचाना है समाज में भावी पीढ़ी को सुरक्षित रखना है यदि परिवार का निर्माण करना है तो महर्षि दयानन्द जी की संस्कारविधि के आधार पर ही सम्भव है। यह एक चमत्कार है। हम आर्यों के लिए भी एक सन्देश है कि हम भी उस संस्कार विधि को स्वयं नहीं पढ़ पाते क्योंकि आधुनिकता की दौड़ में हम पीछे रहने में अपना अपमान अनुभव करने लगे हैं संस्कार विधि मात्र हमने समझा है कि इसे तो पुरोहित पढ़ेगा उसे ही संस्कार कराना है। पुरोहित इसलिए नहीं पढ़ते कि उनसे कोई सब संस्कार कराता नहीं अतः नामकरण, विवाह और अन्येष्टि तक ही पुरोहित संक्षिप्त हो गए है इसमें भी समयाभाव है अतः मात्र खानापूर्ति से कार्य चल जाता है अब बाताओ १६ से ३ रह गए हैं उसमें भी अब पुरोहित की कोई मुख्य भूमिका नहीं रहती मात्र मन्त्रपाठ किया शीघ्रता है दोनों को ही यजमान को भी है पुरोहत को कहीं अन्यत्र जाना है अतः कार्य ठीक चल रहा है कु० सुखलाल जी कहा करते थे कि न तुम्हें वख्त है न मुझे वख्त है इसलिए मैं भी कमवख्त हूँ और तुम भी कमवख्त हो मुझे लग रहा इस भाग दौड़ में हम महर्षि की भावनाओं से कितने दूर चले गए हैं। जब समाज टूट रहा है धर्मगुरू समाज को खोखला कर रहे हैं। परिवारों में पिता–पुत्र, पति–पत्नी आदि सम्बन्ध मधुरता की जगह खट्टे हो रहे है, तब हमें महर्षि दयानन्द जी ही बचा सकते हैं अतः आज आप संकल्प लेवें कि स्वयं परिवार, समाज, राष्ट्र निर्माण के लिए मुझे संस्कारविधि पढ़कर उसके अनुसार अपने जीवन का निर्माण करना है। तभी हम महर्षि के सपनों को सकार कर सकते हैं।

– सम्पादक

गतांक से आगे .....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ सप्तमसमुल्लासारम्भः

प्रश्न– वेद किन ग्रन्थों का नाम है?

उत्तर– ऋक्, यजुः साम और अथर्व मन्त्रसंहिताओं का, अन्य का नहीं।

प्रश्न– मन्त्रब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्।।

इत्यादि कात्यायनादिकृत प्रतिज्ञासूत्रादि का अर्थ क्या करोगे?

उत्तर–देखो! संहिता पुस्तक के आरम्भ अध्याय की समाप्ति में वेद यह सनातन से शब्द लिखा आता है और ब्राह्मण पुस्तक के आरम्भ वा अध्याय की समाप्ति में कहीं नहीं लिखा। और निरूक्त में–

इत्यपि निगमो भवति। इति ब्राह्मणम्।। छान्दोब्राह्मणानि च तद्विषयाणि।।

– यह पाणिनीय सूत्र है।

इससे भी स्पष्ट विदित होता है कि वेद मन्त्रभाग और ब्राह्मण व्याख्याभाग हैं। इसमें जो विशेष देखना चाहैं तो मेरी बनाई 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' में देख लीजिये। वहां अनेकशः प्रमाणों से विरुद्ध होने ये यह कात्यायन का वचन नहीं हो सकता ऐसा ही सिद्ध किया गया है। क्योंकि जो मानें तो वेद सनातन कभी नहीं हो सकें क्योंकि ब्राह्मण पुस्तकों में बहुत से ऋषि महर्षि और राजादि के इतिहास लिखे हैं और इतिहास जिसका हो उसके जन्म के पश्चात् लिखा जाता है। वेदों में किसी का इतिहास नहीं किन्तु विशेष जिस-जिस शब्द से विद्या का बोध होवे उस-उस शब्द का प्रयोग किया है। किसी मनुष्य की संज्ञा वा विशेष कथा का प्रसंग वेदों में नहीं।

प्रश्न– वेदों की कितनी शाखा हैं?

उत्तर– एक हजार एक सौ सत्ताईस।

प्रश्न– शाखा क्या कहता हैं?

उत्तर– व्याख्यान को शाखा कहते हैं।

प्रश्न– संसार में विद्वान् वेद के अवयवभूत विभागों को शाखा मानते हैं?

उत्तर– तनिक सा विचार करो तो ठीक। क्योंकि जितनी शाखा हैं वे आश्वलायन आदि ऋषियों के नाम से प्रसिद्ध हैं और मन्त्रसंहिता परमेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हैं। जैसे चारों वेदों को परमेश्वरकृत मानते हैं वैसे आश्वलायनी आदि शाखाओं को उस-उस ऋषिकृत मानते हैं और सब शाखाओं में मन्त्रों की प्रतीक धर के व्याख्या करते हैं। जैसे तैत्तिरीय शाखा में 'इषे त्वोर्जे त्वेति' इत्यादि प्रतीकें धर के व्याख्या किया है। और वेदसंहिताओं में किसी की प्रतीक नहीं धरी। इसलिये परमेश्वरकृत चारों वेद मूल वृक्ष और आश्वलायनादि सब शाखा ऋषि मुनिकृत हैं, परमेश्वरकृत नहीं। जो इस विषय की विशेष व्याख्या देखना चाहैं व 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' में देख लेवें।

जैसे माता पिता अपने सन्तानों पर कृपादृष्टि कर उन्नति चाहते हैं वैसे ही परमात्मा न सब मनुष्यों पर कृपा करके वेदों को प्रकाशित किया है। जिससे मनुष्य अविद्यान्धकार भ्रमजाल से छूटकर विद्या विज्ञानरूप सूर्य को प्राप्त होकर अत्यानन्द में रहैं। और विद्या तथा सुखों की वृद्धि करते जायें।

प्रश्न– वेद नित्य हैं वा अनित्य?

उत्तर– नित्य हैं। क्योंकि परमेश्वर के नित्य होने से उसके ज्ञानादि गुण भी नित्य हैं। जो नित्य पदार्थ हैं उनके गुण, कर्म, स्वभाव नित्य और अनित्य द्रव्य के अनित्य होते हैं।

प्रश्न– क्या यह पुस्तक भी नित्य है?

उत्तर– नहीं। क्योंकि पुस्तक तो पत्रे और स्याही का बना है वह नित्य कैसे हो सकता है? किन्तु जो शब्द अर्थ और सम्बन्ध हैं वे नित्य हैं?

प्रश्न–ईश्वर ने उन ऋषियों को ज्ञान दिया होगा और उस ज्ञान से लोगों ने वेद बना लिये होंगे?

उत्तर– ज्ञान ज्ञेय के बिना नहीं होता। गायत्र्यादि छन्द षड्जादि और उदात्ताऽनुदात्तादि स्वर के ज्ञानपूर्वक गायत्र्यादि छन्छों के निर्माण करने में सर्वज्ञ के बिना किसी का सामर्थ्य नहीं है कि इस प्रकार का सर्वज्ञानयुक्त शास्त्र बना सकें। हां! वेद को पढ़ने के पश्चात् व्याकरण, निरुक्त और छन्द आदि ग्रन्थ ऋषि मुनियों ने विद्याओं के प्रकाश के लिए किये हैं। जो परमात्मा वेदों का प्रकाश न करे तो कोई कुछ भी न बना सके। इसलिये वेद परमेश्वरोक्त हैं। इन्हीं के अनुसार सब लोगों को चलना चाहिये और जो कोई किसी से पूछे कि तुम्हारा क्या मत है तो यही उत्तर देना कि हमारा मत वेद अर्थात् जो कुछ वेदों में कहा है हम उसको मानते हैं।

अब इसके आगे सृष्टि के विषय में लिखेंगे। यह संक्षेप से ईश्वर और वेदविषय में व्याख्यान किया है।।७।।

इति श्रीमद्दयानन्दसरस्तीस्वामिकृते
सत्यार्थप्रकाशे ईश्वरवेदविषये सुभाषाविभूषिते
सप्तमः समुल्लासः सम्पूर्णः।।७।।

– क्रमशः

यज्ञशाला

-यश वर्मा

यह सारा संसार, सारा ब्रह्माण्ड उस प्रभु, उस परम पूजनीय परमपिता परमेश्वर की यज्ञशाला है। इस यज्ञशाला में सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश सभी मिलकर आहूतियां डाल रहे हैं प्रभु के यज्ञ में सब इस यज्ञ में यजन कर रहे हैं। इस यज्ञ द्वारा प्राणी मात्र का पालन पोषण हो रहा है सूर्य प्राणी मात्र को जीवन प्रदान कर रहा है अग्नि रूप में, वहीं चन्द्र साथ–साथ शीलतला प्रदान कर रहा है जल रस दे रहा है पृथ्वी तो सबका आधार है ही वायु हमारे प्राण हैं तो आकाश हमें स्थान दे रहा है गति के लिए। वनस्पति जगत् को देखिए, कितने प्रकार के फल–फूल, मेवे, अन्न, सब्जियां, औषधियां, अनेक प्रकार के स्वाद, रस, गन्ध, गुण लिए हुए हैं। कहीं घने जंगलों से भरे हुए पर्वत हैं तो कहीं पर बर्फ से ढके हुए पर्वत, मानो प्रकृति ने सफेद चादर ओढ़ा दी हो पर्वतों को कल–कल करती हुई नदियाँ मानो प्रभु का गुणगान करती हुई, ऊँचे पर्वतों से चलकर मैदानों में आ रही हैं हरियाली बिखेरने खेतों के अन्दर, हमारे घरों को अन्न से भरने के लिए। एक ओर वनस्पति जगत है तो दूसरी ओर सोने, चांदी, हीरे, लोहे, कोयले न जाने कितने प्रकार के पदार्थ भर दिए प्रभु ने इस पृथ्वी में समुद्र में अथाह जल राशि है और न जाने कैसे–कैसे जीव और साथ ही कितना ऐश्वर्य भर दिया–सीप, मोती, मूंगे, रत्न आदि के रूप में कैसे सैंकड़ों–हजारों मील से वह जल राशि वर्षा के रूप में हमारे पास, हमारे घर, खेत में आ जाती है। हमें खुशी व ऐश्वर्य देने के लिए प्रभु की इस सुन्दर सुखद यज्ञशाला में नाना प्रकार के कीट–पतंग, पशु–पक्षी, मानव, वनस्पति सब किसी न किसी रूप में एक–दूसरे के सहायक बने हुए हैं। यह सब प्रभु का यज्ञ ही तो चल रहा है इस संसार रूपी *यज्ञशाला में जिस प्रकार प्रभु की यह सुन्दर* यज्ञशाला है, उसी प्रकार हमारा यह मानव शरीर भी एक अनुपम यज्ञशाला है यजुर्वेद का एक मंत्र है–

ओ३म् सप्तऽऋषयः प्रतिहिताः शरीरे,
सप्त रक्षिन्ति सदम प्रमादम्।
सप्त आपः स्वपतोलोकमीयुस्तत्र
जाग्रतो अस्वपनप्रजौ सत्र सदौ च दैवौ।। यजु.
३४/५५

इस सुन्दर मंत्र का अर्थ है कि शरीर में सात ऋषि स्थापित हैं जो इस यज्ञशाला की प्रमाद रहित होकर रक्षा करते रहते हैं। सुषुप्त अवस्था में यह सात ज्ञान प्रवाह अपने लोक में लीन हो जाते हैं। तब भी यज्ञ में बैठे रहने वाले दो देव, कभी न सोने वाले, जागते रहते हैं।

यह जो हमारा मानव देह है, यह एक पवित्र यज्ञशाला है। इस यज्ञशाला में सात ऋषि यजन कर रहे हैं। ये सात ऋषि कोई और नहीं बल्कि हमारे आँख, नाक, कान, रसना, त्वचा, मन और *बुद्धि हैं। इनका कार्य है रूप, गंध, श्रवण, रस, स्पर्श,* मनन व अवधारणा (निश्चय)। यह ज्ञान शक्तियाँ प्रभु ने इस देह में यजन के लिए प्रदान की हैं। जाग्रत अवस्था में ये सातों ऋषि भजन करते रहते हैं, कभी आँख नहीं कहती कि मैं नहीं देखती अथवा, मन नहीं कहता कि मैं आज मनन नहीं करूंगा। सातों ऋषि निरंतर कार्यरत रहते हैं। स्वप्नावस्था में भी अपना–अपना कार्य करते रहते हैं। लेकिन सुषुप्ति अवस्था में ये अपने–अपने लोक में लीन हो जाते हैं। ऐसे समय में भी दो देव इस देह में ऐसे हैं जो जन्म के भी पहले से और मृत्यु पर्यन्त सदैव यजन करते रहते हैं। वे दो देव है आत्मा व प्राण आत्मा का कार्य है दर्शन शक्ति अथवा ज्ञान शक्ति। प्रगाढ़ निद्रा आने पर हम प्रातः उठकर कहते हैं कि आज बड़ी अच्छी नींद आई यह ज्ञान आत्मा को ही तो होता है। प्राण, निद्रा में भी प्राण शक्ति प्रदान करता है तभी तो हमारे में पुनः कार्य करने की शक्ति आ जाती है थके हारे सोते हैं व प्रातःकाल तरोताजा उठते हैं।

परमात्मा की यज्ञशाला को तो मानव ने बहुत प्रदूषित कर दिया है चाहे वह वायु हो, चाहे जल हो या आकाश मण्डल हो या पृथ्वी हो, किसी को नहीं छोड़ा। बहुत ही विचारणीय प्रश्न है मानव के लिए अन्यथा प्रकृति तो अपना भयावह रूप दिखाएगी ही।

परमात्मा ने ये सात शक्तियां दी हैं मानव को यजन के लिए भोग तो पशु भी भोग रहे हैं इस प्रकृति को क्या मानव भी इसीलिए भेजा है संसार में प्रभु ने, कि जो संसार को, प्रकृति को भोग लें। यदि कोई ऐसा सोचता है तो गलत है। प्रभु ने एक लक्ष्य देकर भेजा है हमें और वह है प्रभु की प्राप्ति, तभी तो वेद का मन्त्र है–

ओ३म् तच्चक्षुर्देवहितं.....

सौ वर्ष तक इन ऋषियों का यजन देखना, सुनना, मनन आदि प्रभु को पाने के लिए हो केवल भोग के लिए नहीं। जितना भोग करो वह भी त्याग भाव से हो।

विचारणीय बात तो यह है कि क्या ये ऋषि यजन को छोड़ तो नहीं बैठे इस संसार की चकाचौंध में, इस रंगीली दुनिया में। कहीं यह ऋषि पथभ्रष्ट तो नहीं हो गए। ये ऋषि पथभ्रष्ट न हों इसीलिए हम गायत्री मन्त्र में व अन्य कुछ मन्त्रों में जैसे ओ३म् यां मेघां देवगणाः... में प्रभु से बुद्धि की कामना करते हैं। हमारी बुद्धि पक्त्रि हो, सन्मार्ग पर चलने वाली हो। बुद्धि पवित्र रखने के लिए हम सतसंग, स्वाध्याय, प्रभु चिन्तन आदि का सहारा लेते हैं। यदि इसके ठीक विपरीत बुद्धि कुमार्ग की ओर चल पड़ी तो हमारी कामनाएं बढ़ जाती हैं, और कामना पूर्ण न होने पर व्यक्ति को क्रोध आता है। क्रोध से सर्वप्रथम तो व्यक्ति का चेहरा बिगड़ जाता है। जब आप क्रोध में हैं तो एक बार शीशा देख लेना और फिर बताना मेरी बात ठीक है या नहीं। क्रोध से भाषा बिगड़ जाती है, यहां तक कि बड़े–छोटे की तमीज़ नहीं रहती पाचन क्रिया, ब्लड प्रेशर, दिल व दिमाग पर प्रभाव पड़ता है इसलिए जब भी क्रोध आए शुरू में ही थोड़ा–सा सम्भल जाओ। अच्छा बताइए सबसे अधिक क्रोध किस पर आता है। सोचने की आवश्यकता नहीं है, सीधा–सा उत्तर है, पति–पत्नी को एक दूसरे पर। अपने रिश्ते बहुत कीमती हैं। क्रोध करके अपने रिश्ते मत बिगाड़ो। कोई गलतफहमी हो जाए तो शीघ्र दूर कर लो, कहीं ऐसा न हो कि बहुत देर हो जाए और फिर कई दिन, मास और वर्ष बीत जाएं। अपने दिमाग को खाली कर दो, विचारों को गुब्बारे की तरह हवा में उड़ा दो और कहो कि सब ठीक है **(All is well)** सहज रहो, हर परिस्थिति में सहज रहना सीख लो। हर घर हो, कार्यालय हो, समाज हो, सड़क पर हो, मन्दिर में, स्टेशन पर हो, कही पर भी हो, भीड़ में हो या जंगल में हो, सहज रहना सीख लो। दो व्यक्ति एक जैसी परिस्थिति में होते हैं परन्तु एक सहज होता है तो दूसरा असहज क्योंकि उनकी मन की स्थिति भिन्न–भिन्न हैं।

सहज रहो, हर परिस्थिति में सहज रहना सीख लो। हर घर हो, कार्यालय हो, समाज हो, सड़क पर हो, मन्दिर में, स्टेशन पर हो, कहीं पर भी हो, भीड़ में हो या जंगल में हो, सहज रहना सीख लो। दो व्यक्ति एक जैसी परिस्थिति में होते हैं परन्तु एक सहज होता है तो दूसरा असहज क्योंकि उनकी मन की स्थिति भिन्न–भिन्न हैं।

अपनी मनःस्थिति ठीक रखने के लिए हमें प्रभुमय बनना होगा, जिससे हमारा वस्तुओं से, रिश्ते नातों से, सुख–दुख से मोह नष्ट होने लगेगा। हमारे अच्छे विचार संस्कार बनेंगे। एक सभा के अन्दर एक विद्यार्थी महात्मा जी से पूछता है कि यदि मैं चोरी करके देसी घी खाता रहूं तो क्या मेरे अन्दर शक्ति/बल नहीं आएगा महात्मा जी उत्तर देते हैं कि बेटा तेरे में बल तो आ जाएगा लेकिन चोरी का घी तुझे चोर बना देगा और आगे जाकर तू डाकू भी बन सकता ही होगा। इसलिए हम अपनी कामनाओं और क्रोध पर नियन्त्रण रखते हुए, अपने मन की स्थिति को शांत बनाए रखें व अच्छे विचारों के साथ संस्कारी बनें। हर परिस्थिति में समन्वित **(Adjustment)** करना सीख लें इसका अभिप्राय ऐसा नहीं कि इतना झुक जाएँ कि लोग हमें तोड़ दें जैसे एक साँप था, सबको काटता था। शिवजी ने उसे कहा कि तुम लोगों को काटा मत करो। साँप नीचे लेट गया किसी को काटता नहीं था। लोगों ने उसके ऊपर से निकलना, फिर पैर रखकर निकलना प्रारम्भ कर दिया। साँप घायल हो गया, फिर शिव जी आए और उससे पूछा, यह क्या हो गया। तब उसने अपनी व्यथा सुनाई तब शिवजी ने कहा, मैंने यह तो नहीं कहा था कि फुफकारना छोड़ दो कहने का भाव है कि जीवन में थोड़ा झुकना, थोड़ा तनना, सीख लो जैसे सितार को न बहुत अधिक कसा जाता है न बहुत ढीला किया जाता है, बस ट्यूनिंग की जाती है इसी तरह हम भी अपने जीवन की यम–नियम के द्वारा ट्यूनिंग कर लें। थोड़ा अपने जीवन में लोकव्यवहार में निपुणता हासिल कर लें। हम अपने हाथ की ओर देखें जो हमें कर्म व धर्म को साथ मिलकर चलने की शिक्षा दे रहा है। हाथ की चार उंगलियाँ कर्म का और अगूँठा धर्म का द्योतक है। जब चारों उगलियाँ और अगूँठा अर्थात् कर्म और धर्म साथ–साथ चलते हैं तो जीवन सफल हो जाता है। हमारे जीवन में केवल स्वार्थ न हो बल्कि परमार्थ की भावना हो। एक राजा के पास बीस अनमोल कृतियाँ थी। एक कृति एक सेवक से टूट गई तो राजा ने उसे फाँसी पर चढ़ा दिया। राजा ने ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो ऐसी कृति बना देगा उसे ईनाम दिया जाएगा। एक व्यक्ति आया राजा के पास और कहा कि मुझे उन्नीस कृतियाँ दिखाई जाएँ। उसे वे कृतियाँ दिखाई गई तो उसने वे सभी कृतियाँ तोड़ डाली। राजा को बहुत क्रोध आया। राजा ने पूछा कि यह तुमने क्यों किया, वह व्यक्ति बोला मैंने १६ व्यक्तियों की जान बचाई है। तब राजा को समझ आई कि अपनी जान की परवाह न करने वाला व्यक्ति कितना उपकारी है समाज के लिए। यह सोचकर बिना कुछ कहे उसे जाने दिया। एक कवि की चार पंक्तियाँ इस प्रकार है–

आत्मज्ञान से अपने तू, दृष्टि का बदल कर ले,
जब जोत जगे अन्दर, प्रभु का दर्शन कर ले।
पीके ओ३म् नाम रस मीठा, तू ओ३म्
भजन कर ले,
ओ३म् नाम सिमर कर ले, मुक्ति का
यत्न कर ले।।

हम अपनी दृष्टि को सांसारिक पदार्थों से हटाकर थोड़ा–सा प्रभु की ओर लगा लें तो हम प्रभु की यज्ञशाला को पवित्र रखने में सहायक हो सकते हैं। इसके साथ हमारे देह के सातों ऋषि भी पवित्र रहकर पथभ्रष्ट होने से बच सकते हैं। यह हमारी मानव देह रूपी यज्ञशाला भी पवित्र रहेगी और हम प्रभु के प्यारे बन जाएँगे।

ओ३म् शांति शांति शांति।।

– आर्य समाज, मॉडल टाऊन, यमुना नगर
मो० ६४१६४४६३०५

प्राकृतिक पदार्थों की सूक्ष्मता की अंतिम सीमा सूक्ष्मविषयत्वं चालिङ्गपर्यवसानम्

–स्वामी विष्वङ् परिव्राजक

पूर्व सूत्र में यह कहा गया है कि सविचारा एवं निर्विचारा नाम वाली समाधियाँ सूक्ष्म विषय वाली होती हैं। प्रस्तुत सूत्र में यह स्पष्ट किया जा रहा है कि वस्तुओं की सूक्ष्मता की सीमा क्या है? अर्थात् कौन–कौन सी वस्तुएँ सूक्ष्म होती हैं? कौन–सी वस्तु किससे अधिक सूक्ष्म होती हैं? और इस सूक्ष्मता का अन्त (समाप्ति) या सीमा कहाँ तक है? इन्हीं प्रश्नों के समाधान के लिए प्रस्तुत है।

सर्वप्रथम हमें यह समझना चाहिए कि 'सूक्ष्म' किसे कहते हैं? अर्थात् सूक्ष्म शब्द का अर्थ है? इस संदर्भ में महर्षि का निर्वचन किया है कि 'सूचयति पैशुन्यं करोतीति सूक्ष्मम्, अत्यल्पं वा' अर्थात् जो न्यूनता को दिखाता है उसे सूक्ष्म कहते हैं अथवा जो थोड़ा है उसे सूक्ष्म शब्द के दर्शाये हैं, चाहे न्यूनता कहो, चाहे थोड़ा कहो इनका एक अभिप्राय स्थान की दृष्टि से है और दूसरा ज्ञान की दृष्टि से है। स्थान की दृष्टि से सूक्ष्मता इस प्रकार समझनी चाहिए कि संपूर्ण ब्रह्माण्ड कार्य, पदार्थ (उत्पन्न पदार्थ) है। उत्पन्न–पदार्थ कारण–पदार्थ की अपेक्षा अधिक स्थान (अवकाश) घेरता है। कौन–सा पदार्थ कितना स्थान घेरता है इसे समझने के लिए 'परिणाम' शब्द का प्रयोग करते हैं। जो पदार्थ न्यून या थोड़ा स्थान घेरता है, उसे अल्प परिणाम वाला कहा जाता है और जो पदार्थ अधिक स्थान घेरता है, उसे महत् परिमाण वाला कहा जाता है। महत् परिणाम वाले पदार्थ की अपेक्षा अल्प परिणाम वाले पदार्थ को सूक्ष्म पदार्थ कहते हैं।

सूक्ष्मता का दूसरा अभिप्राय ज्ञान की दृष्टि से इस प्रकार समझना चाहिए कि कोई पदार्थ थोड़ी–सी जानकारी से समझ में आता है और कोई पदार्थ अत्यधिक जानकारी से समझ में आता है और कोई पदार्थ अत्यधिक जानकारी से समझ में आता है। उदाहरण के लिए घड़ा कैसे बनता है, इसे समझने के लिए ज्ञान, पंखे के मोटर को समझने के लिए ज्ञान और परमात्मा को समझने के लिए ज्ञान चाहिए। परन्तु ईश्वर को समझने के लिए जो ज्ञान चाहिए वह सबसे अधिक ज्ञान चाहिए और वह भी बड़ी कठिनाई से जाना जाता है, उस पदार्थ को सूक्ष्म शब्द से व्यवहार करते हैं। जैसे कि परमात्मा को कहा जाता है कि परमात्मा बहुत सूक्ष्म है अर्थात् सब से सूक्ष्म है। उपनिषदादि शास्त्रों में परमात्मा को अतिसूक्ष्म कहा गया है।

परमात्मा स्थान की दृष्टि से तो सूक्ष्म नहीं है। क्योंकि वह महत् परिमाण वाला है। परमात्मा से रिक्त स्थान नहीं है, परमात्मा सब जगह (स्थान में) व्याप्त है। इसलिए परमात्मा की सूक्ष्मता स्थान की दृष्टि से नहीं है। फिर एक ही मार्ग बचता है वह है ज्ञान को दृष्टि से सूक्ष्मता। हाँ, यदि कोई परमात्मा को इस रूप में कहे कि सूक्ष्म से सूक्ष्म स्थान में परमात्मा विद्यमान है, इसी कारण स्थान के उपचार (लक्षणा से) ईश्वर को सूक्ष्म कहे, तो कोई आपत्ति नहीं है। परन्तु उसे गौण प्रयोग कहते हैं मुख्य प्रयोग नहीं। 'सूक्ष्म' शब्द का सार यह निकला कि सूक्ष्मता स्थान की दृष्टि से होती है और ज्ञान की दृष्टि से होती है।

प्रस्तुत सूत्र में स्थान की दृष्टि से सूक्ष्मता कही जा रही है। संप्रज्ञात की चार समाधियों में से सवितर्का और निर्वितर्का समाधियों का विषय स्थूल पदार्थ (पंचमहाभूत) हैं और सविचारा व निर्विचारा समाधियों का विषय सूक्ष्म पदार्थ हैं। परमपिता परमेश्वर ने सृष्टि की उत्पत्ति सत्व, रज, तम से की है। निर्माण की प्रक्रिया में पंचमहाभूत अन्तिम पदार्थ माने जाते हैं। यह अलग बात है कि पांचों भूतों को मिला कर सूर्य, चन्द्र शरीरादि का निर्माण हुआ है। इसलिए सूक्ष्मता प्रारम्भ होती है पंचमहाभूतों के कारणों अर्थात् पंच तन्मात्राओं से। ये पंच तन्मात्राएं सूक्ष्म विषय हैं पंच तन्मात्राओं से सूक्ष्मता प्रारम्भ होती है और यह सूक्ष्मता कहाँ तक जाती है, इस बात को समझाने के लिए 'सूक्ष्मविषयत्वं चालिङ्गपर्यवसानम्' सूत्र है।

महर्षि वेदव्यास सूक्ष्मता को समझाते हुए लिखते हैं कि 'पार्थिवस्याणोर्गन्धतन्मात्र सूक्ष्मो विषयः।'

अर्थात् पृथिवी का जो एक अणु है, उस अणु का का कारण गन्धतन्मात्रा है, वह गन्धतन्मात्रा पृथिवी अणु की अपेक्षा सूक्ष्म है। जैसे कि पूर्व में लिखा है कि कार्य की अपेक्षा कारण सूक्ष्म होता है क्योंकि कार्य अधिक स्थान घेरता है और कारण अल्प स्थान घेरता है, इसलिए कारण सूक्ष्म होता है। इसी प्रकार 'आप्यस्य रसतन्मात्रम्' अर्थात् अग्नि का जो अणु है, उस अणु का जो कारण रूपतन्मात्रा है, वह अग्नि की अपेक्षा सूक्ष्म है। 'वायवीयस्य स्पर्शतन्मात्रम्' अर्थात् वायु का जो अणु है, उस अणु का जो कारण स्पर्शतन्मात्रा है, वह वायु की अपेक्षा सूक्ष्म है।

'आकाशस्य शब्दतन्मात्रमिति' अर्थात् आकाश का जो अणु है, उस अणु का जो कारण शब्दतन्मात्रा है, वह आकाश की अपेक्षा सूक्ष्म है। तन्मात्राएं भी किसी की अपेक्षा कार्य पदार्थ है, इसलिए उनका भी कारण होना चाहिए और वह कौन–सा कारण है? ऋषि लिखते हैं कि 'तेषाहंकारः' अथात् उन तन्मात्राओं का जो कारण अहंकार है, वह तन्मात्राओं की अपेक्षा सूक्ष्म है। वह अहंकार भी किसी का कार्य है, उसके कारण को बताते हुए महर्षि लिखते हैं– 'अस्यापि लिङगमात्रं सूक्ष्मो विषयंः' अर्थात् इस अहंकार का जो कारण लिङ्ग स्वरूप महत्व है, वह अहंकार की अपेक्षा सूक्ष्म है। यहां पर महत्व (बुद्धि) को लिङ्ग शब्द से कथन किया है। 'लिङ्ग' इसलिए कहते हैं 'यद् लयं गच्छति तद् लिङ्म्' अर्थात् जो वस्तु कारण में विलीन होती (मिल जाती) है। उसे लिङ्ग कहना चाहिए, क्योंकि वे भी कारण में लीन होती हैं। यह बात ठीक है कि अन्यों को भी कह सकते हैं परन्तु नहीं कहेंगे। क्योंकि ऐसा कहने पर लोक में व्यवहार नहीं हो पायेगा। इसलिए कुछ शब्दों का प्रयोग रूढ़ी में किया जाता है। जैसे पंकज का प्रयोग लोक में कमल के लिए करते हैं। ऐसा ही यहां पर भी समझना चाहिए।

आगे महर्षि लिखते हैं कि लिङ्ग का भी कोई कारण है वह है 'लिङ्गमात्रस्याप्यलिङ्गं सूक्ष्मो विषयः' अर्थात् महत्व रूपी लिङ्ग का जो कारण अलिङ्ग है, वह लिङ्ग की अपेक्षा सूक्ष्म है। यहां पर अलिङ्ग का तात्पर्य सत्व, रज, तम है। सत्व, रज, तम को अलिङ्ग इसलिए कहते हैं कि वह किसी में लीन नहीं होता है। वह स्वयं कारण है अर्थात् अन्तिम कारण है। अन्तिम कारण का कोई कारण नहीं होता है। यह सर्वमान्य सिद्धान्त है कि प्रत्येक कारण का कारण नहीं होता है। यदि प्रत्येक कारण का कारण नहीं होता है। यदि प्रत्येक कारण का कारण होने लगे, तो व्यवहार भी नहीं चलता क्योंकि कारण के कारण को समझना कभी समाप्त नहीं होग। ऐसी स्थिति में करने योग्य अन्य व्यवहार नहीं कर पायेंगे। महर्षि वेदव्यास कहते हैं कि 'न चालिङ्गात् परं सूक्ष्ममस्ति' अर्थात् सत्व, रज, तम रूपी अलिङ्ग से सूक्ष्म और कोई पदार्थ नहीं है इस पर आक्षेपकर्ता कहता है कि– 'नन्वस्ति पुरुषः सूक्ष्म इति।'

अर्थात् सत्व, रज, तम से सूक्ष्म पदार्थ पुरुष है। तो महर्षि स्वीकार करते हैं– 'सत्यम्' अर्थात् आपकी बात बिलकुल ठीक है। परन्तु स्पष्टीकरण भी करते हैं कि पुरुष की सूक्ष्मता कार्य–कारण सम्बन्ध से नहीं है। इस बात को समझाने के लिए आगे ऋषि लिखते हैं कि यथा लिङ्गात्परमलिङ्गस्य सौक्ष्म्यं न चैवं पुरुषस्य। अर्थात् जिस प्रकार महत्वरूपी कार्य–पदार्थ की अपेक्षा सत्व, रज, तम रूपी कारण, पदार्थ की सूक्ष्मता है, ऐसी सूक्ष्मता पुरूष की नहीं है। 'किन्तु लिङ्गस्यान्वयिकारणं पुरुषो न भवति।' अर्थात् वह पुरुष महत्व रूपी लिङ्ग का उपादान कारण नहीं है। यहां पर अन्वयी–कारण उपादान–कारण को कहते हैं। यद्यपि पुरुष उपादान–कारण तो नहीं है परन्तु 'हेतुस्तु भवतीति।' अर्थात् कारण अवश्य बनता है। अर्थात् महत्व के उत्पन्न होने में कारण अवश्य बनता है।

उपादान–कारण का खण्डन किया जा रहा है और कारण भी बताया जा रहा है, तो पुरुष को निमित्त कारण समझना चाहिए। यहां प्रसंग के अनुसार पुरुष शब्द का अर्थ परमेश्वर ग्रहण करना चाहिए। क्योंकि महत्व का निमित्त कारण परमेश्वर ही है। हां, यदि कोई यह कहे कि पुरुष शब्द सामान्य अर्थ को बताने वाला है और वह सामान्य अर्थ जीवात्मा और परमात्मा है। ऐसी स्थिति में जीवात्मा का भी ग्रहण करें, तो प्राणियों द्वारा निमित्त–पदार्थों का निमित्त कारण बनेगा। महत्व का निमित्त कारण कभी नहीं बनेगा। महर्षि वेद व्यास भाष्य का उपसंहार करते हुए लिखते हैं कि 'अतः प्रधाने सौक्ष्म्यं निरतिशयं व्याख्यातम्।

इसलिए प्रधान (सत्व, रज, तम) में सर्वाधिक सूक्ष्मता है, ऐसी व्याख्या समझनी चाहिए। सर्वाधिक सूक्ष्मता का अभिप्राय यह है कि यह ही अन्तिम सूक्ष्म है, इसके आगे और कोई सूक्ष्मता नहीं है। कारण की सूक्ष्मता सत्व, रज, तम पर्यन्त ही है। सत्व, रज, तम को प्रधान, अव्यक्त, प्रकृति और स्वधा शब्दों से भी कथन किया जाता है।

'सूक्ष्मविषयत्वं चालिङ्गपर्यवसानम्' सूत्र का संक्षेप से यह अर्थ लेना चाहिए कि पंचमहाभूतों से सूक्ष्म पंतन्मात्राएं हैं, ऐसी सूक्ष्मता तंमात्रओं से प्रारम्भ हो कर सत्व, रज, तम तक है। सत्व, रज, तम के आगे और कोई सूक्ष्मता नहीं है।

महर्षि के भाष्य में जो पुरुष की सूक्ष्मता कही गई है वह सूक्ष्मता ज्ञान की दृष्टि से लेनी चाहिए, जो प्रारम्भ में कह आये हैं।

'वैदिक धर्म सर्वश्रेष्ठ क्यों है?'

-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

संसार में अनेक मत मतान्तर प्रचलित हैं। सभी अपने आप को मत, पन्थ आदि न कह कर ''धर्म'' कहते हैं। क्या यह सभी धर्म हैं? यदि ये सभी धर्म होते तो इनकी सभी मान्तयायें, सिद्धान्त व परम्परायें एक समान होती व सत्य होती। जल का जो धर्म है वह उसका तरल होना, मनुष्य की प्यास बुझाना, हाइड्रोजन तथा आक्सीजन के संयोग से बनना, गर्मी के सम्पर्क में आकर गरम होना व जमने पर ठण्डा होना आदि हैं। जल के यह धर्म संसार में सर्वत्र एक समान हैं तो फिर मनुष्यों के जो धर्म हैं वह भी एक विषय में तो एक समान होने ही चाहिए। अब यदि उनमें अन्तर व विरोधाभास है तो इसका अर्थ है कि सभी मत–पन्थों की सभी मान्यतायें व सिद्धान्त सत्य नहीं है। यदि ऐसा है तो सभी मतों को अपनी–अपनी स्वयं की समीक्षा करनी चाहिये और सत्य का ग्रहण तथा असत्य का त्याग कर चाहिये। परन्तु देखा यह जा रहा है कि कोई मत अपनी असत्य व मनुष्यता के लिये हानिकारक बातों को छोड़ने के लिए तैयार नहीं हैं। ऐसे भी मत हैं जो येन केन प्रकारेण उचित व अनुचित तरीकों से अपनी जनसंख्या बढ़ा कर देश की सत्ता को अपने मत के अधीन लाना चाहते हैं। दूसरी ओर हमारे ही देश में हमारे पौराणिक विरासत को सुरक्षित रखने के लिए कोई विशेष पुरूषार्थ करते हुए नहीं दीखते।

संसार के सभी मतों पर दृष्टि डलते हैं तो हम यह पाते हैं कि सिख धर्म का लगभग ३१६ वर्षों का इतिहास है। इसे श्री गुरू गोविन्द सिंह जी ने स्थापित किया था। इस्लाम पर विचार करें तो यह भी १५०० वर्षों से अधिक पुराना नहीं है। ईसाई मत लगभग २००० वर्ष पुराना है। इससे पहले यह सभी मत संसार में अस्तित्व नहीं रखते थे। तब इनके अनुयायियों के पूर्वज किस मत का पालन करते थे, यह कभी कोई विचार ही नहीं करता। ईसाई मत से भी प्राचीन बौद्ध, जैन तथा स्वामी भांकर का अद्वैत मत है। इनकी अवधि अधिकतम २५०० वर्ष ही निर्धारित होती है। इससे पूर्व पारसी मत था। इनकी धर्म पुस्तक का नाम 'अवेस्ता' है। यह मत बौद्ध, जैन आदि के समकालीन व इससे भी पुराना है। ५००० वर्ष पूर्व हुए महाभारत युद्ध तक पहुंचे तो ज्ञात होता है कि तब पूरे विश्व में वेद मत वा वैदिक धर्म से इतर कोई धर्म, मत, पन्थ व सम्प्रदाय आदि नहीं था। सभी मत महाभारत काल के बाद उत्पन्न हुए हैं। सृष्टि के आरम्भ काल से महाभारत काल तक पूरे विश्व में केवल वैदिक मत ही था। वैदिक धर्म व मत कब व कैसे अस्तित्व में आया, इस पर विचार करते हैं।

वैदिक मत वेद से अस्तिव में आया है। वेद चार हैं जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्वेद हैं। यह चार वेद सृष्टि के आरम्भ में, अब से १.९६ अरब वर्ष पूर्व, अस्तित्व में आये। वेदों का ज्ञान इस सृष्टि के रचयिता सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्व शक्तिमान तथा सृष्टिकर्ता ईश्वर ने सृष्टि की आदि में अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न चार ऋषि अग्नि, वायु, आदित्य तथा अंगिरा को दिया था। ईश्वर सर्वव्यापक है और इस कारण मनुष्य की जीवात्मा के भीतर भी विद्यमान है। वह आत्मा में प्रेरणा करके ज्ञान देता है। जिस मनुष्य का आत्मा व मन जितना अधिक स्वच्छ व पवित्र होता है, वह उतना ही अधिक ईश्वर के ज्ञान व प्रेरणा को ग्रहण कर सकता है। आदि चार ऋषियों की आत्मा, मन, बुद्धि, हृदय तथा ज्ञानेन्द्रियां सभी वर्तमान मनुष्यों की तुलना में अधिकतम पवित्र थे, इस लिये उन्हें ही ईश्वर ने वेदों का ज्ञान दिया था। ईश्वर इस संसार का रचयिता है। वह सर्वज्ञ व सर्वव्यापक है अतः उसे सृष्टि का ठीक–ठीक ज्ञान है। यदि उसके ज्ञान में किंचित भी न्यूनता होती तो वह मनुष्यों को वेदों का सर्वांगपूर्ण सत्य ज्ञान न दे पाता। ईश्वर के साक्षात्मकार कर्ता एवं वेदों के रहस्य के भीतर साक्षात्कार कर्ता ऋषि दयानन्द ने वेद एवं संसार की प्रायः सभी पुस्तकों को अध्ययन कर घोषणा की है कि 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना–पढ़ना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।' यह बात ऋषि दयानन्द के वेद भाष्य एवं इतर ग्रन्थों को पढ़ने पर सत्य सिद्ध होती है। ऋषि दयानन्द (१८२५–१८८३) ऐसे विद्वान व ऋषि हुए हैं जिन्होंने अपनी मान्यताओं की परीक्षा के लिये सभी मतों के आचार्यों के शंका समाधान व शास्त्रार्थ का स्वागत किया। उन्होंने अपने जीवन में प्रायः सभी मतों के आचार्यों से शास्त्रार्थ व शंका समाधान सहित वैदिक धर्म के सिद्धान्तों पर वार्तालाप किये और सभी को सन्तुष्ट किया। सभी मतों के आचार्यों से शास्त्रार्थ में उनका पक्ष ही सत्य सिद्ध हुआ।

वेदों का ज्ञान प्राप्त होने पर ऋषियों ने वेदाध्ययन व वेद प्रचार की परम्परा को आरम्भ किया। सृष्टि के आरम्भ में प्रचलित यह परम्परा ही महाभारत काल तक तथा उसके बाद ऋषि दयानन्द तक व अब गुरूकुलों के माध्यम से चल रही हैं। वेद की सभी मान्यतायें संसार के सभी मनुष्यों के लिए हितकारी हैं। इससे किसी मनुष्य के प्रति पक्षपात व अन्याय नहीं होता। सभी शारीरिक, बौद्धिक, आत्मिक व सामाजिक क्षमता के अनुसार अपनी–अपनी उन्नति कर सकते हैं। वेदों में न अन्धविश्वास हैं न कुरीति व मिथ्या परम्परायें। वेदों का ज्ञान पूर्ण तर्क संगत, सत्य एवं प्राणीमात्र के लिये हितकारी है। वेदों के सत्य सिद्धान्तों पर भी एक दृष्टि डाल लेते हैं जिससे वेद सर्वश्रेष्ठ सिद्ध हो जाते हैं और वेदों से प्रचलित मनुष्य के सभी धर्म व कर्तव्य भी सर्वश्रेष्ठ सिद्ध होते हैं।

वेदों के अध्ययन से ईश्वर के सत्यस्वरूप सहित जीवात्मा और सृष्टि का अनादि कारण प्रकृति का ज्ञान भी उपलब्ध होता है। ईश्वर, जीवात्मा और प्रकृति ही संसार के मूल अनादि तत्व व पदार्थ हैं। ईश्वर व जीवात्मा चेतन तत्व हैं तथा प्रकृति सूक्ष्म व जड़ पदार्थ है। विज्ञान जिस अनादि तत्व व पदार्थ हैं। ईश्वर व जीवात्मा चेतन तत्व हैं तथा प्रकृति सूक्ष्म व जड़ पदार्थ है। विज्ञान जिस परमाणु को मानता है वह प्रकृति से बने हैं। प्रकृति परमाणुओं से भी पूर्व की अवस्था है। इन परमाणुओं की रचना ईश्वर ने ही की है। परमात्मा सर्वव्यापक, सर्वातिसूक्ष्म तथा प्रकृति के भीतर भी व्यापक है। इस कारण वह परमाणु एवं सृष्टि की रचना कर सकता है व उसने की भी है। यह भी कह सकते हैं कि मूल प्रकृति से ही परमाणु एवं सृष्टि की रचना कर सकता है व उसने की भी है। यह भी कह सकते हैं कि मूल प्रकृति से ही परमाणु व कार्य जगत बना है। संसार में तीन पदार्थों ईश्वर, जीव तथा प्रकृति के अनादि अस्तित्व को त्रैतावाद का सिद्धान्त कहा जाता है। ईश्वर ने सृष्टि की रचना क्यों की? इसका उत्तर है कि ईश्वर ने अपने ज्ञान व सृष्टि रचना की सामर्थ्य को जीवों के कल्याण के लिए प्रकट किया है। यदि ईश्वर सृष्टि की रचना न करता तो कौन कहता कि ईश्वर सृष्टि रचयिता है व वह सृष्टि की रचना कर सकता है। ईश्वर ने सृष्टि की रचना इस लिये कि है कि सृष्टि में विद्यमान, मनुष्य की दृष्टि में, अनन्त जीवों को उनके पूर्व जन्मों के शुभ व अशुभ कर्मों का फल प्राप्त करा सके।

संसार के सर्वाधिक प्रचलित मतों को इस जन्म–मृत्यु व पुनर्जन्म के रहस्य व सिद्धान्त का ज्ञान नहीं है। वेद जीवात्मा के पुनर्जन्म के सिद्धान्त को मानते हैं। पुनर्जन्म का कारण के शुभ व अशुभ कर्त तथा उनका सुख व दुःख रूपी फल व भोग होता है। पुनर्जन्म का सिद्धान्त ज्ञान, तर्क व अनेक आधारों पर सत्य सिद्ध होता है। संसार के अनेक मत अज्ञानतावश पुनर्जन्म के सत्य विद्धान्तों को न जानते हैं और न मानते हैं। पं. लेखराम जी ने उन्नीसवी शताब्दी के अन्त में पुनर्जन्म पर एक पुस्तक लिखी थी जिसमें उन्होंने पुनर्जन्म विषयक सभी प्रश्नों को सम्मिलित कर उनका तर्कपूर्ण उत्तर दिया है। वैदिक धर्मियों के परिवारों में जब सन्तान जन्म लेती है तो उसका जातकर्म संस्कार होता है। इस संस्कार में ईश्वर के दिये वेदमन्त्र बोले जाते हैं। बच्चों को ओ३म् नाम सुनाया जाता है। उसे यह भी बताया जाता है कि तू वेद अर्थात् ज्ञान व कर्म की भक्ति से युक्त है और तुझे वेद व सांसारिक ज्ञान प्राप्त कर इश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना, यज्ञ, पुरूशार्थ, परोपकार तथा दान आदि करके एवं अपने मन को संयम में रखकर मोक्ष को प्राप्त करना है। मोक्ष का सिद्धान्त जैसा वेद व वैदिक साहित्य में है, किसी मत व मतान्तर में नहीं है। इस सिद्धान्त से अन्य मतों की अनभिज्ञता का कारण हमें उनकी अज्ञानता प्रतीत होता है। वैदिक धर्म में मनुष्य की मृत्यु होने पर उसका दाहकर्म व अन्त्येष्टि कर्म किया जाता है। अन्य मतों में प्रायः ऐसा नहीं होता। वहां मृतक शरीर को भूमि में गाड़ने का विधान है। इसका कारण उन्हें जीवात्मा और शरीर का ठीक–ठीक ज्ञान न होना है। आत्मा के शरीर निकलने के बाद जड़ शरीर बचता है। यह शरीर पंच तत्वों से मिलकर बना हुआ होता है। अतः इसे अग्नि में जलाकर पंच–तत्वों में विलीन करना होता है। यह शरीर पंच तत्वों से मिलकर बना हुआ होता है। अतः इसे अग्नि में जलाकर पंच–तत्वों में विलीन करना होता है। शरीर में हमें जो सुख दुःख होता है वह हामरी आत्मा को होता है। आत्मा के निकल जाने पर शरीर को जलाने से उसे किंचित भी कष्ट या दुःख नहीं होता। अतः सभी को मृत्यु होने पर उसका दाह कर्म ही करना चाहिये जिससे भूमि प्रदुषित होने

शेष पृष्ठ ६पर

पृष्ठ ५ का शेष

'वैदिक धर्म सर्वश्रेष्ठ ....

से बच सके अन्यथा आने वाले समय मैं कृषि भोष नहीं रहेगी।

वैदिक धर्म में गर्भाधान से अन्त्येष्टि पर्यन्त सोलह संस्कार करने का विधान है। इन संस्कारों को करने का कारण व उसकी विधि तथा उसमें जिन वेद मन्त्रों का विनियोग वा विधान है, वह अत्युत्तम व श्रेष्ठ है। अन्य मतों में इसका भी अभाव है। वैदिक धर्म की एक विशेषता यह भी है कि यहां नारी को पुरूष से भी अधिक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। मनुस्मृति में लिखा है कि जहां नारियों का सम्मान होता है उस घर व परिवार में देवता अर्थात् श्रेष्ठ मानव निवास करते हैं। अन्य मतों में नारी की ऐसी गौरवपूर्ण स्थिति नहीं है। वैदिक धर्म में सामाजिक व्यवस्था भी श्रेष्ठ है। यह व्यवस्था जन्म पर आधारित न होकर गुण, कर्म व स्वभाव पर आधारित है। देश व समाज में ज्ञान की पूर्ति करने वालों को ब्राह्मण, देश व समाज की रक्षा व न्याय करने वालों को क्षत्रिय, कृषि व वाणिज्य कार्य करने वालों को वैश्य और जो ज्ञान, शारीरिक बल में न्यून तथा उन्नत कृषि व व्यापर आदि नहीं कर सकते उन्हें अन्य तीन वर्णों की सेवा करने के कारण शूद्र व श्रमिक कहा जाता है। वैदिक काल में यह सब परस्पर सौहार्दपूर्वक रहते थे। हमारे शरीर में ज्ञान का स्थान स्थिर है, बल व कर्म का स्थान हमारे बाहू हैं, कृषि व वाणिज्य कर्म का प्रतीक हमारा उदर है तथा सेवा के प्रतीक हमारे पैर हैं। शरीर में जिस प्रकार सभी अंग आपस में प्रेम व एक विचार होकर रहते हैं, इसी प्रकार समाज में भी सभी वर्णों को संगठित एवं प्रेम पूर्वक रहना चाहिये। मध्यकाल में इस व्यवस्था में विकार आने से यह अपनी महत्ता खो बैठी। आज भी विश्व, देश, समाज में ज्ञानी को प्रथम स्थान, बलवान व बुद्धिमान को द्वितीय तथा कृषक व्यापारी को तृतीय स्थान प्राप्त है। यह भी वैदिक वर्ण व्यवस्था का एक क्रियात्मक व उत्तम रूप ही है।

वैदिक धर्म में एक पत्नी व एक पति का सिद्धान्त है। इसी को आदर्श गृहस्थी माना जाता है और यह है भी। वैदिक धर्म में तलाक जैसी कुप्रथा भी नहीं है। यहां एक बार विवाह हो गया तो उनका सम्बन्ध मृत्यु होने पर ही छूटता है। अन्य मतों के सम्पर्क में अपने पर इसमें भी कुछ बुराईयां आ गई हैं। वैदिक धर्म मनुष्य को सत्य पर आधारित सत्याचरण व शुभ कर्म करने की प्रेरणा देता है। यज्ञ से दूसरे प्राणियों को भी लाभ होता है जिसका पुण्य यज्ञ करने वाले को होता है और इसका सुखद परिणाम ईश्वर से जीव को प्राप्त होता है। अन्य मतों में ऐसे विधान नहीं है। इन सब श्रेष्ठ विधानों व सिद्धान्तों के होने से वैदिक धर्म सर्वश्रेष्ठ सिद्ध होता है। हम आह्वान करते हैं कि बुद्धिमान लोगों को वैदिक धर्म की शरण में आकर अपने जन्म व जीवन को श्रेष्ठ बनाना चाहिये। सच्चा वैदिक धर्मी इस जन्म में भी सुख पाता है और मरने के बाद भी उसकी उन्नति होकर उसे मोक्ष प्राप्त होता है। आईये, वेदों का अध्ययन करें तथा पृथिवी के श्रेष्ठ वैदिक धर्म को अपनायें। इसी में मनुष्य मात्रका कल्याण है। ओ३म् शम्।

पता– १६६ चुक्खूवाला–२, देहरादून–२४८००१
फोनः ०६४१२६८५१२१

सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर पाओ लाख रुपये

आर्यावर्त्त केसरी सत्यार्थप्रकाश पुरस्कार योजना

मुख्य कार्यालय-अर्यावर्त केसरी, आर्यावर्त कालोनी, मुरादाबादी गेट, अमरोहा (उ०प्र०)-२४४२२१

गत अठारह वर्षों से आर्यसमाज के प्रचार–प्रसार में अग्रणी 'आर्यावर्त केसरी' पाक्षिक पत्र के द्वारा सत्यार्थ प्रकाश परीक्षा आयोजित की जा रही है। प्रतिभागियों के उत्सावर्द्धन के लिए आकर्षक पुरस्कार दिये जाएंगे–

प्रथम पुरस्कार– एक लाख रूपये तथा तथा स्मृति चिह्न।

द्वितीय पुरस्कार– पचास हजार रूपये तथा स्मृति चिह्न।

तृतीय पुरस्कार– पच्चीस हजार रूपये तथा स्मृति चिह्न।

नामित पुरस्कार– इसकी संख्या निश्चित नहीं है क्योंकि ये श्रद्धालुओं के परिजनों के नाम से दिये जाएंगे।

सान्त्वना पुरस्कार– एक–एक हजार के पच्चीस पुरस्कार।

कैसे बनेंगे विजेता :–

(१) परीक्षा में वस्तुनिष्ठ प्रश्न होंगे, जिनका उत्तर उत्तर पुस्तिका में लिखना होगा।

(२) किसी भी आयुवर्ग का व्यक्ति परीक्षा दे सकता है।

(३) आर्यावर्त केसरी के २५ सदस्य एक स्थान पर बनाने वाले का पंजीकरण निःशुल्क होगा एवं आर्यावर्त केसरी की ओर से उसको फोटोयुक्त प्रेस परिचय पत्र दिया जाएगा।

(४) पत्र–व्यवहार में सत्यार्थ प्रकाश परीक्षा लिफाफे पर अवश्य लिखें। परीक्षा का अयोजन दिनांक ७ जुलाई २०१६ को इन प्रस्तावित केन्द्रों–दिल्ली, अमरोहा, ग्रेटर नोएडा, लखनऊ, नजीबाबाद, बरनावा, सासनी, मेरठ, बनारस, बरेली, गुरुग्राम, महेन्द्रगढ़, झज्जर, हिसार, रोहतक, मुम्बई, बेंगलूरु, कलकत्ता, चेन्नई, होशंगाबाद, हैदराबाद, बोकारो, भोपाल, चण्डीगढ़, रोजढ़, अहमदाबाद, हिरद्वार, देहरादून, उदयपुर तथा कोटा आदि में सम्पन्न होगी। परीक्षा केन्द्रों की संख्या बढ़ाने अथवा घटाने तथा परीक्षा तिथि में परिवर्तन करने का अधिकार संयोजक मण्डल को होगा पच्चीस से अधिक परीक्षार्थी होने पर ही केन्द्र बनाया जाएगा।

- रजिस्ट्रेशन शुल्क देने में अक्षम प्रतिभागियों के शुक्ल में सहयोगी बनें।
- देश भर में केन्द्र संचालकों की आवश्यकता है, जो परीक्षा केन्द्र अपने नगरों में बनवाने के लिए हमसे सम्पर्क और सहयोग करें।
- अपने प्रियजनों की स्मृति के पुरस्कार उनके नाम से नामित कराकर आप स्वयं दें।

विशेष :

१. जो भी परीक्षार्थी विजेता घोषित होगा, उसको पुरस्कार प्राप्त करने से पूर्व मंच पर अपनी योग्यता भी सिद्ध करनी होगी। पुरस्कार–मंच पर उससे जनसामान्य के द्वारा सत्यार्थप्रकाश से संबन्धित प्रश्न पूछे जाएंगे।

२. जो भी धर्मनिष्ठ सज्जन अपनी ओर से कोई नामित पुरस्कार देना चाहेंगे, उनकी इच्छानुसार (स्वयं या किसी प्रियजन के नाम से, जैसा वे चाहें) उनके द्वारा पुरस्कार दिलवाया जाएगा।

- परीक्षा में बैठने के लिए आर्यावर्त केसरी, निकट–मुरादाबादी गेट, अमरोहा के पते पर अपना नाम, पता, फोटो, परिचय पत्र की छायाप्रति के साथ १५० रूपये की धनराशि देनी होगी, जिसमें प्रतिभागी को एक सत्यार्थप्रकाश दिया जाएगा या छः माह की आर्यावर्त केसरी पाक्षिक की सदस्यता दी जाएगी। यदि आप अपना रजिस्ट्रेशन डाक द्वारा कराएंगे, तो उस स्थिति में आर्यावर्त केसरी के भारतीय स्टेट बैंक, अमरोहा स्थित बचत खाता संख्या– 30404724002 (ICFSC Code SBIN 0000610) में रू २००/– (दो सौ रूपये केवल) जमा कराने होंगे तथा रसीद की छयाप्रति भेजनी होगी। पंजीकरण दिनांक ०१ अक्टूबर २०१८ से प्रारम्भ हो चुके हैं। अमरोहा कार्यालय में अथवा ग्रेटर नोएडा स्थित श्री सुमन कुमार वैदिक के निवास पर कराये जा सकते हैं।

नोटः गुरूकुल के आचार्य आयोजन समिति से संपर्क कर अपने गुरूकुल में परीक्षा–केन्द्र बनवा सकते हैं, तथा गुरूकुल से ही रजिस्ट्रशन करा सकते हैं। आर्य समाज के प्रधान/मंत्री भी अपने आर्य समाज में केन्द्र बनवा सकते हैं।

संरक्षकगण– स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, प्रधान अखिल भारतीय गुरूकुल परिषद, **ठा० विक्रम सिंह,** अध्यक्ष–वैदिक सिद्धांत रक्षक मण्डल एवं, राष्ट्र निर्माण पार्टी, **सुरेश चन्द्र आर्य,** प्रधान–सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा, **डॉ० सोमदेव शास्त्री,** प्रधान–मुम्बई मिशन, मुम्बई।

आयोजन समिति :– सुमन कुमार वैदिक, मुख्य संयोजक, निवास–जे.३८०,बीटा–।।, ग्रेटर नोएटा, उ.प्र. मो.: ८३६८५०८३६५, **डॉ० अनिल रायपुरिया** –संयोजक, निवास–कोट बाजार, अमरोहा, उ.प्र., मो० : ६८३७४४२७७७, **डॉ० अशोक कुमार आर्य,** संपादक– आर्यावर्त केसरी, मो०: ६४१२१३६३३३।

आर्य समाज दशहराबाग का ४वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

बाराबंकी। आर्य सामज दशहराबाग बाराबंकी का ८वां वार्षिकात्सव आर्यावर्त साधना सदन के तत्वावधान में ६ से ११ नवम्बर तक ४ दिवसीय विश्व कल्याण महायज्ञ एवं राष्ट्र निर्माण महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुरूप बनाने के लिए आचार्य चन्द्रदेव अध्यक्ष अखिल भारतीय राजार्य सभा, आचार्य शैलेन्द्र आर्य अहमदाबाद, पं० दिनेश दत्त दिल्ली, ब्रह्मचारी जयदेव फर्रूखाबद, अमित वादक दिल्ली, गणेश मुनि पीलीभीति, राममुनि शाहजहांपुर, ब्रह्मचारी नरेन्द्र कर्णवाश्रय उत्तराखण्ड के सानिध्य में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर कार्यक्रम संयोजक आचार्य सुरेश वैदिक प्रवक्ता एवं पंडित रूक्मिणी जी ने पुष्पमाला से विद्वानों व कार्यकर्ताओं का स्वागत किया।

जिसमें मुख्य रूप से मानवेन्द्र पाठक, राजेश द्विवेदी, गिरीश पहलवान, रमापति अवस्थी, देवम मिश्र, डा० बृजेश शुक्ल, मोहनलाल साहू, ज्ञान प्रकाश मिश्र, शिवशंकर द्विवेदी, डा० सुरश, डा० अजय, राम कुमार अनिल पाल, राजीव अवस्थी, राजू सिंह, विनोद कुमार आर्य, ओम प्रकाश आदि लोगों का सहयोग रहा।

आर्य समाज मीरापुर का चुनाव सम्पन्न

दिनांक २५.११.२०१८ को आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ के प्रधान डॉ० धीरज सिंह के द्वारा नियुक्त किए गए चुनाव अधिकारी श्री अरूण कुमार आर्य द्वारा आर्य समाज मीरापुर का चुनाव सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ जिसमें अध्यक्ष, डॉ०जय भगवान आर्य मंत्री, सुरेन्द्र कुमार आर्य कोषाध्यक्ष, एवं रविन्द्र कुमार आर्य को संरक्षक चुना गया। वेद प्रकाश आर्य व कर्मजीत सिंह आर्य सहित कमैटी का गठन किया गया।

आर्य समाज जूही का ४०वें वार्षिकोत्सव में राजार्य आर्य सभा की धूम

गोण्डा। आर्य समाज जूही ८०वें वार्षिक उत्सव आचार्य सुरेश चंद्र जोशी उपदेशक एवं रूक्मिणी देवी, भजनोपदेशिका एवं रूक्मिणी देवी, भजनोपदेशिका के सानिध्य में १६ से १८ नवम्बर तक महर्षि दयानंद सरस्वती के मन्तव्यों को जन–जन तक पहुँचाने के लिए विश्व कल्याण महायज्ञ हुआ। तदोपरांत आर्य जगत के उपदेशक एवं राजार्य आर्य समाज के राष्ट्रीय प्रवक्ता आचार्य सुरेश चंद्र जोशी ने वर्तमान में व्याप्त पाखण्ड कुरीतियों को जड़ से खत्म करने के लिए, वेदों की ओर लौटने के लिए आवहन किया, राष्ट्र की उन्नति, तभी सम्भव है। जब एक ईश्वर एक अभिवादन एक धर्मग्रन्थ एक विचार होगा। इसे केवल आर्य समाज ही दे सकता है। इसे आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश नामक पुस्तक में विस्तार से दिया है। कार्यक्रम के अंत में राजार्य आर्य सभा की बैठक हुई जिसमें आगामी २०१६ के चुनाव में राजार्य आर्य सभा की अहम भूमिका होगी। इसके लिए देश के प्रत्येक आर्य समाज के लोगों को इस राष्ट्र नीति के अनुरूप कार्य करने का संकल्प लेना होगा।

इसमें पूर्वांचल के सभासद व पदाधिक्कारी उपस्थित उपस्थित रहे। मुख्य रूप से पूर्वांचल राजार्य आर्य सभा, गजेन्द्र आर्य, सभाजीत सिंह आर्य प्रधान, आतेश प्रकाश आर्य मंत्री, राधेश्याम आर्य कोषाध्यक्ष, रामभवन आर्य, हंसराज आर्य, ओमप्रकाश आर्य, नित वरून सिंह, चंद्र मोहन गोयल, शारदा देवी आर्य, विनोद कुमार आर्य उपस्थित रहे।

प्रेरक प्रसंग

काम करो

सुकरात के पास एक मनुष्य आया और कहने लगा– "आय कम है। घर में बाल–बच्चे और खाने–पीने वाले बहुत हैं। निर्वाह करना कठिन हो रहा है। कोई उपाय बताने की कृपा कीजिए, जिससे इस कष्ट से छुटकारा मिलें।"

सुकरात ने पूछा–"घर के सब लोग क्या काम करते हैं" वह मनुष्य बोला– "क्या वे किसी के नौकर हैं जो काम करें।" सुकरात ने कहा–" तब तो नौकर ही श्रेष्ठ हैं जो काम करके खाते हैं।" वह बोला–" मैं आपका अभिप्राय नहीं समझा।" सुकरात ने बताया–"घर के सब मनुष्यों, बच्चों को भी कुछ न कुछ उपयोगी काम अवश्य ही करना चाहिए। उस काम से जो आय होगी वह आवश्य ही सबके व्यय के लिए पर्याप्त होगी।"

थोड़े दिन बाद वही व्यक्ति फिर आया और कहने लगा– "आपकी कृपा से सब ठीक हो गया है। घर की स्त्रियाँ और बच्चे सीने–पिरोने, बुनने और काढ़ने आदि किसी न किसी उपयोगी काम में लगे रहते हैं। पर्याप्त आय हो जाती है। सब काम भली प्रकार चल जाते हैं। परन्तु एक उलझन पैदा हो गई है। घर के सब लोग अपने आपको तो अब खूब कमाऊ समझते हैं और मुझे निखट्टू कहते हैं।"

सुकरात ने उसे एक कहानी सुनाई और कहा– "घर जाकर यह कहानी सबको सुना दो। बस फिर कोई उलझन शेष न रहेगी। उसने वही कहानी घर जाकर सबको सुनाई। उस दिन से सबने उस व्यक्ति को निखट्टू कहना छोड़ दिया। सुकरात की वह कहानी इस प्रकार है–

भेड़ों ने अपने स्वामी से कहा–"हम तुम्हें अन्न देती हैं, बच्चे देती हैं, दूध देती हैं। फिर भी तुम हमें कुछ नहीं देते। जंगल में चुग–फिर कर हम अपना पेट भरती हैं और तुम्हारा यह कुत्ता तुम्हें कुछ भी नहीं देता, फिर भी तुम इसे अपने भोजन में से हिस्सा देते हो। क्या यह अन्याय नहीं है?

मालिक से पूर्व ही कुत्ते ने उनको उत्तर दिया– "नहीं, यह तो सर्वथा न्याय है। यह मैं ही हूँ तो तुम्हारी रक्षा करता हूँ नहीं तो तुम्हें भेड़िया खा जाये या चोर चुराकर ले जाये। यदि मैं तुम्हारी रक्षा के लिए सावधान न रहूँ तो चिन्ता के मारे तुम्हारा चलना–फिरना और चरना भी बन्द हो जाये।" भेड़ें समझ गयीं। सार–परिश्रम व उद्योग वह सोने की चाबी है जो भाग्य के फाटक को खोल देती है।

वेदों की शिक्षा से राष्ट्र कल्याण सम्भव

–स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती

६ नवम्बर, किला परीक्षितगढ़– वेदज्ञान की शिक्षा से ही राष्ट्र कल्याण सम्भव है परिवारों की सुख समृद्धि का मार्ग वेदों के माध्यम से प्राप्त होता है यज्ञ संस्कृति वैदिक संस्कृति कहलाती है मानव मात्र को श्रेष्ठ बनाने का आदेश वेदों में है "मनुर्भव" का आदेश वेदों में है ये विचार ग्राम दुर्वेशपुर में ऋग्वेद यज्ञ के अवसर पर आर्य प्रतिनिधिसभा उ०प्र० के महामन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती संचालक गुरूकुल पूठ गढ़मुक्तेश्वर हापुड़ व्यक्त कर रहे थे। उन्होंने बताया मानव का निर्माण शिक्षा एवं संस्कारों से होता है शरीर से मनुष्य राक्षस भी होता है इसी शरीर में मनुष्य और देवताओं का भी वास रहता है यज्ञों के द्वारा मनुष्य की देवत्व ऊर्जा का निर्माण होता है इसलिए वेदों की शिक्षा से राष्ट्र का कल्याण होता है आसुरी वृत्तियों से विनाश होता है महात्मा राजमुनि तिमराज सिंह प्रधान आर्य समाज मुख्य यजमान रहे उनके ८२वें जन्मदिवस पर इस यज्ञ का परिवार ने आयोजन किया है स्वामी विजयानन्द सरस्वती ने बताया कि यह परिवार पिछले २०–२५ वर्षों से वेदों का यज्ञ कर रहा है उसका परिणाम परोपकार की भावना प्रत्येक बालक में भरी हुई है सेवा–संस्कार सुरक्षित हैं इससे बड़ा परिणाम क्या हो सकता है। आचार्य वेदपाल शास्त्री, योगाचार्या मनुशास्त्री ने मिलकर वेदपाठ किया और स्वाहा को यज्ञ की आत्मा बताया अपने प्रत्येक परिवार में प्रतिदिन यज्ञ करने की प्रेरणा दी बिजनौर से पधारे कुलदीप विद्यार्थी एवं म० जगमाल सिंह के सुमधुर भजनों के साथ ईश्वर भक्ति और वैदिक विचारधारा का सन्देश दिया। कार्यक्रम में विक्रम सिंह, सतवीर सिंह, सोमवीर सिंह, ओमवीर सिंह राहुल, सचिन भानुसिंह, सोममुनि, परिणोषा आदि–आदि ने आहुतियां प्रदान की।

समस्त आर्य समाजों/जिला आर्य प्रतिनिधि सभाओं को आवश्यक सूचना एवं निर्देश

आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, नारायण स्वामी भवन, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ से सम्बद्ध उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड में कार्यरत् आर्य समाजों एवं जिला आर्य प्रतिनिधि सभाओं के प्रधान/मन्त्री/कोषाध्यक्ष को सूचित किया जाता है, संस्था आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, लखनऊ द्वारा प्रदेश में कार्यरत् सभी आर्य समाजों एवं जिला सभाओं को बावत वर्ष–2019 एवं वित्तीय वर्ष–2017–2018 हेतु वार्षिक चित्र प्रेषित किये जा रहे हैं। सभी आर्य समाजों के पदाधिकारियों को निर्देशित किया जाता है, कि वे अपनी–अपनी आर्य समाजों का वार्षिक विवरण भरकर संस्था कार्यालय में दिनांक–30 नवम्बर, 2018 तक वार्षिक चित्र (वार्षिक विवरण) एवं दशांश जमा करने हेतु सूचना एवं निर्देश जारी किया गया है, अतः सभी आर्य समाजों की भागीदारी सुनिश्चित किये जाने हेतु दिनांक–15 दिसम्बर, 2018 निर्धारित किया जाता है, अतः वांछित अभिलेख एवं चित्रादि जमा करके रसीद प्राप्त कर लें तथा निम्न अभिलेख सभा कार्यालय में उपलब्ध करा दें:–

01– सभासदों की सूची तथा सभासद बनाये जाने की तिथि अंकित किया जाना आवश्यक है।
02– साधारण सदस्यों की सूची तथा सभासद बनाये जाने की तिथि अंकित किया जाना आवश्यक है।
03– वार्षिक चुनाव कार्यवाही पंजिका की छायाप्रति।
04– विगत वर्ष की जमा दशांश रसीद की छायाप्रति।
05– चल–अचल सम्पत्तियों का विवरण।
06– आर्य समाज के प्रधान, मन्त्री एवं कोषाध्यक्ष के नाम एवं मोबाईल नंम्बर एवं आर्य समाज का स्पष्ट पता।
07– आर्य समाज में कितने कक्ष, यज्ञशाला एवं किरायेदार हैं और कितना किराया देते हैं का विवरण।

(स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती), सभा मन्त्री

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूरभाष : ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०६४१२७४४३४१, मंत्री- ०६८३७४०२१६२, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com ई-मेल आर्य मित्र aryamitrasaptahik@gmail.com

सेवा में,
.....
.....

विभिन्न आर्य समाजों में सम्पन्न हुए कार्यक्रमों की झलकियाँ

आर्य समाज बुढ़ाना मुजफ्फर नगर, के पारायण यज्ञ से लिया गया छाया चित्र

गढ़ गंगा के आर्य महोत्सव से लिया गया छाया चित्र

आर्य समाज कान्टोमेन्ट के वार्षिक उत्सव में शोभायात्रा तथा यज्ञ एवं सत्संग से लिया गया छाया चित्र

आर्य समाज कान्टोमेन्ट के वार्षिक उत्सव में शोभायात्रा तथा यज्ञ एवं सत्संग से लिया गया छाया चित्र

ढाईघाट शाहजहांपुर में गंगा स्नान वेदप्रचार करते हुए आचार्य चन्दन मित्र व आर्य जन

महर्षि दयानन्द काशी शास्त्रार्थ आनन्दबाग, दुर्गाकुण्ड के महोत्सव में भाग लेती गुरुकुल की छात्राएं एवं आर्य जन

आर्य समाज लल्लापुर वाराणसी में साप्ताहिक सत्संग में वेद चर्चा करते हुए आचार्य ज्वलंत कुमार शास्त्री एवं आचार्या प्रियंवदा भारती जी

आर्य समाज बगहां मीरजापुर का वार्षिकोत्सव दिनांक 1 व 2 मार्च 2019 व आर्य समाज रामगढ़ मीरजापुर का वार्षिकोत्सव 3 व 4 मार्च शिवरात्रि को धूमधाम से मनाया जा रहा है। जिसमें आप सादर आमंत्रित हैं।

-: आगन्तुक उपदेशकगण :-

1. श्री पं. विश्व्रत शास्त्री, लखनऊ, 2. श्रीमती बहन धर्म रक्षिता देवी, बिहार 3.पं. श्री राम अधार शास्त्री रसूलपुर, मिर्जापुर 4. पं. जीवन सिंह रजौली, मिर्जापुर

- बेचन सिंह संरक्षक, आर्य समाज बगहा, मिर्जापुर

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक - मुद्रक -प्रकाशक -श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5-मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है- सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।